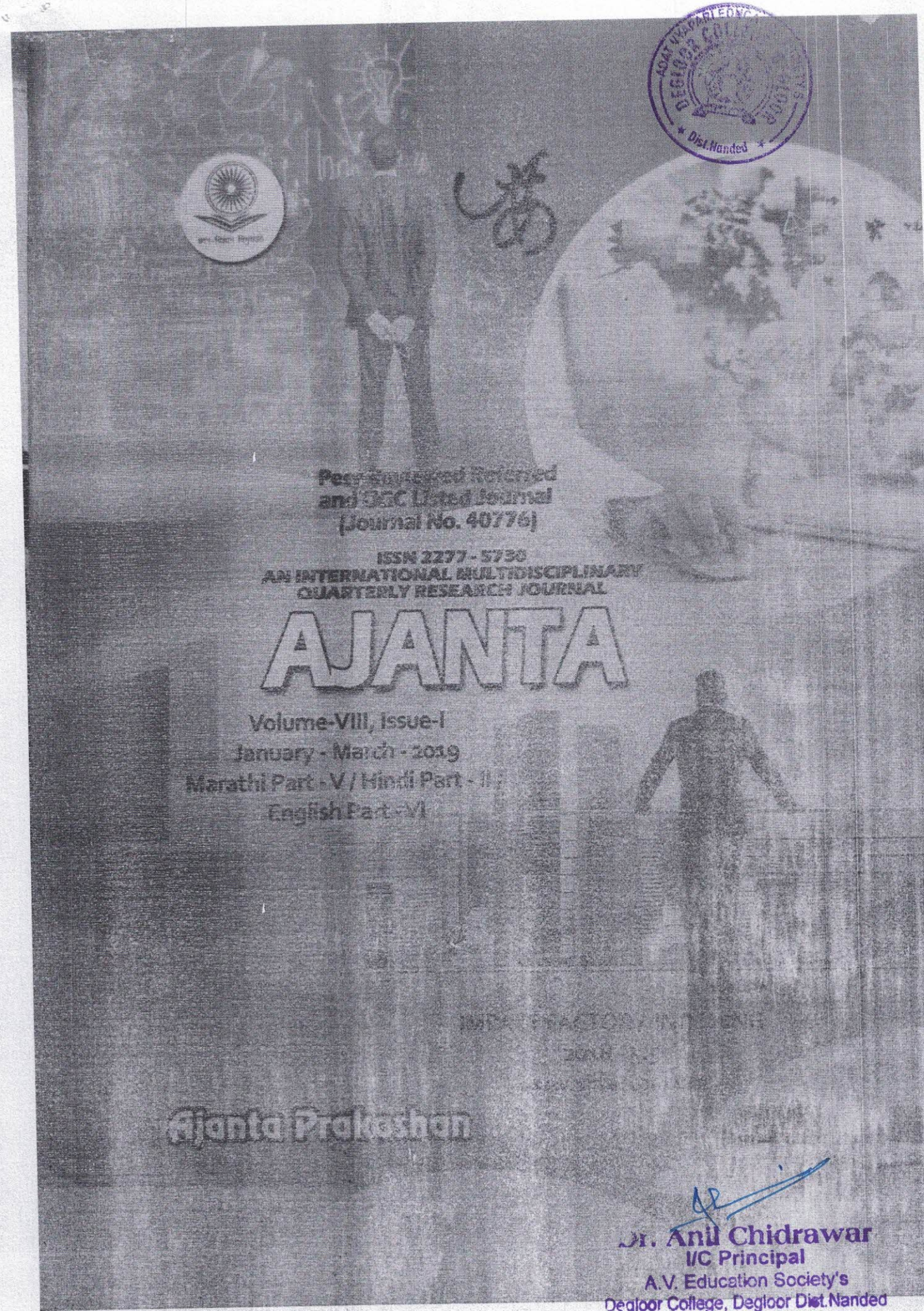

Peer-Reviewed Refereed
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Marathi Part - V / Hindi Part - II /
English Part - VI

Ajanta Prakashan

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded

ADARSH VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist.Nanded

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - VIII Issue - I January - March - 2019

Marathi Part - V / Hindi Part - II / English Part - VI

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

VOLUME - VIII, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR * Dist. Nanded

CONTENTS OF HINDI PART - II

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	भारतीय संविधान एवं महिला प्रा. ज्योती जी. नाकतोडे	१-५
२	सरोगेट विज्ञापन के संवाद और उत्पाद के संबंधों का विश्लेषण राजेश लेडकपुरे डॉ. अख्तर आलम	६-१०
३	भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में आकाशवाणी का योगदान डॉ. गुरदयाल सिंह	११-१४
४	भारतीय संगीत के प्रचार-प्रसार में जन संचार माध्यमों का योगदान Arshi	१५-१९
५	दूरदर्शन एवं शास्त्रीय संगीत Dr. Sarvesh Sharma	२०-२२
६	भारतीय चित्रपट संगीत का वर्तमान समाज पर प्रभाव Prabhdeep Singh	२३-२५
७	हिन्दी फिल्मों मे अभिव्यक्त भारतीय समाज प्रा. डॉ. संतोश विजय येरावार	२६-२९
८	सिनेमा का भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में योगदान Jagtar Singh Panesar	३०-३३
9	Media Ke Sansaadhano Dwara Shaastriya Sangeet Ka Prachar Evam Prasar Dr. Layeka Bhatia	34-38
१०	संगीत के प्रचार एवं प्रसार में मोबाइल फोन का महत्व Dr. Thakur Singh	३९-४२
११	छबीगृह एवं केबल नेटवर्क का सामाजिक प्रभाव : एक अध्ययन डॉ. कमलकिशोर बा. इंगोले	४३-४६
१२	मोबाईल और युवा संगीत विद्यार्थी Prof. Raideep singh	४७-४८

VOLUME - VIII, ISSUE - I- JANUARY - MARCH - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

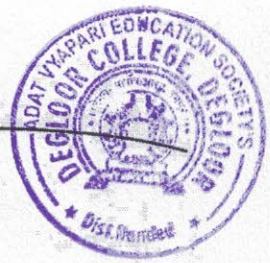

७. हिन्दी फिल्मों मे अभिव्यक्त भारतीय समाज

प्रा. डॉ. संतोश विजय येरावार
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंन्दी विभाग प्रमुख देगलूर महाविद्यालय, देगलूर ता. देगलूर जि. नांदेड - ४३१७१७

समाज से परे मानव का अस्तित्व बेमानी हैं । मानव का समाज पर और समाज का मानव पर प्रभाव निरंतर परिवर्तनशील एवं गतीशील हो गया हैं। बदलते मानव, समाज, विचार, मुल्य, समस्या, सभ्यता एवं परिस्थितियों का यथार्थ अंकन हिन्दी फिल्मों में अभिव्यक्त हुआ हैं । समाज में व्याप्त विकृतियों, विडंबनाओं, विषमताओं, एवं समस्याओं को अपनी वास्तविकता के साथ उघाडने का कार्य हिन्दी फिल्म जगत नें किया हैं । आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, पारिवारिक एवं राजनीतिक परिस्थिति को एवं उनसे जुडे प्रश्नों को भी वाणी प्रदान की गई हैं । हिन्दी फिल्मों नें समाज का अंकन कर बुराईयों को दूर करने का निरंतर प्रयास कर मानव को आयना दिखाने का कार्य किया हैं । वैश्वीकरण, बाजारीकरण, नीजिकरण, शहरीकरण, के कारण समाज तीव्रगती से प्रभावित हुआ हैं इस प्रभाव के सकारात्मक एवं नकारात्मक तत्वों की अभिव्यक्ति फिल्मों में की गई हैं । समाज के विभिन्न अंग, मानवी संवेदना , सामाजिक मुल्य एवं मानव से जुडे विविध प्रश्नों की अभिव्यक्ति हिन्दी फिल्मों में हुई हैं । गरीबी, अशिक्षा, बाल–विवाह, अकाल, भुखमरी, भ्रष्टाचार, बालश्रम, लोकसंख्या वृध्दि, समलैंगिकता, बेरोजगारी, अस्पृश्यता, जातिवाद, बंधक मजदूरी, लिंग असमानता, दहेजप्रथा, बाल यौन शोषण, किशोर अपराध, घरेलू हिंसा, वैवाहिक बलात्कार, कार्यक्षेत्र पर महिलाओं का यौन – शोषण, बलात्कार, कन्याभ्रण हत्या, विधवा विवाह, दहेज समस्या, शराबखोरी, नशाखोरी, भिक्षावृत्ति, अंधविश्वास, अनमेल विवाह, वैश्यावृत्ती से जुडी समस्या, सामुहिक बलात्कार, नक्षलवाद, अस्वछता, आरोग्य, महंगाई, कुपोषण, नशे का व्यापार । अवैध शस्त्र–अस्त्रों का व्यापार, महिलाओं की तस्करी, पशुओं की तस्करी, अवैध निर्माण, शिक्षा का व्यवसायीकरण, ग्रह–नक्षत्रों का व्यापार, गुंडागर्दी, दलाली, मजदुरो का शोषन, शिक्षा का सांप्रदायिकरण, सट्टे का व्यापार, अन्न सट्टा बाजार, कालाबाजारी, जमाखोरी, मुनाफाखोरी । प्रांत, भाषा, जाति और संप्रदाय की राजनीति, प्राकृतिक संसाधनो का दोहन, नकली खाद्य पदार्थ, वायुप्रदुषण, जलप्रदुषण, मुद्राप्रदुषण, मिलावटखोरी, सीमा–वाद, बेईमानी, मानसिक बिमारियॉ, बाजारवाद, घटस्फोट, कुँवारी मॉतावों की समस्या, लिव्ह–इन रिलेशन शिप, विवाहबाह्य संबध, भाषावाद, प्रांतवाद, बाल तस्करी, प्राकृतिक आपदायें, पारिवारिक विघटन, फिल्में, जगत में व्याप्त गोरखधंदे, हॉनी–ट्रॅप, वर्णवाद, वर्गवाद, दलित एवं आदिवासियों की त्रासदी, किसानों की दयनीय अवस्था, निवास की समस्या, अल्पसंख्याक वर्ग की समस्या, ग्रामीण एवं शहरी समस्या, निजिकरण स उपजी कार्य–तनाव की समस्या, प्रशासन में व्याप्त लालफिताषाही एवं लुट – खसोट, तृतीयपंथ वर्ग की समस्या, मॉल–संस्कृति, लैंगिक शोषन, वृदध समस्या, परिवार में व्याप्त कुठा, निराषा, अकेलापन, अजनवीपण एवं अविश्वास । राजनितिक विकृती, सामाजिक विडंबना, अपहरन सांस्कृतिक विषमता, धार्मिक शोषन, आर्थिक असमानता, राजनीति का अपराधीकरण, अर्थकेंदित मनोवृत्ती, वाह्यआंडबर, घुसखोरी एवं आतंकवाद जैसी विविध साामजिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं को एवं विषयों को हिन्दी फिल्मों के माध्यम से

DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR Dist.Nanded

उघाडा गया हैं । समाज की वास्तविकता का चित्रण कर समाज का पथ प्रदर्शन करने का एवं उन्हे सचेत व जागृत करने का कार्य हिन्दी फिल्मों नें किया हैं ।

नारायण सिंह निर्देशित ' टॉयलेट एक प्रेमकथा', आर बाल्की निर्देशित ' पैडमैन', कृष निर्दिशित गब्बर इज बॅक, सुभाष कपूर निर्देशित ' जॉली एल.एल.बी', उमेश शुक्ला निर्देशित 'ओह माय गॉड' । यह अक्षयकुमार की फिल्में समाजउपयोगी विषयों को लेकर बनी हैं । समाज में जागृती, मानसिक परिवर्तन कि बथार, राष्ट्रीय एकात्मता का निर्माण, मानवकल्याण उपयोगी मुल्यों एवं मान्यताओं का प्रचार – प्रसार करना ईन फिल्मों का उद्देश रहा हैं । टॉयलेट एक प्रेम कथा में शौचालय के प्रती जागरुकता निर्माण करने का प्रयत्न किया गया हैं । शौचालय का प्रथा, परंपरा एवं धर्म के नामपर घृणा करने की प्रवृत्ती को उघाडा हैं । ग्रामीण क्षेत्र में रहनेवाली तमाम महिलाओं को शौचालय की सुविधा घर में उपलब्ध न होने के कारन खुले में शौच के लिए जाना पडता हैं । जिसकारन अनेकों बिमारियों का शिकार महिलाए हो जाती हैं । कई बार यौन उत्पीडन और मानसिक प्रताडना का शिकार होना पडता है । शौचालय जैसे महत्वपूर्ण विषयों को फिल्म में अभिव्यक्त कर जनजागृती का प्रयास किया गया हैं । पॅडमैन फिल्म में पीरियड और सैनेटरी नैपकिन संबंधी लोंगों की भ्रमित मानसिकता और पुर्वगृह को बेनकाब किया हैं । भारतीय महिलाएं मासिक धर्म एवं सैनेटरी नैपकिन पर चर्चा करने में लज्जा महसूस करती हैं । मासिक पीरियड से होनेवाली आरोग्य विषयक समस्या सें महिलाएं अंजान हैं । जिसकारन महिलाए परंपरागत पदधतियों का प्रयोग करती हैं जो हानिकारक हैं । महिलाओं की माहवारी और सैनेटरी नैपकिन से जुडी मिथकों को फिल्म में तोडा गया हैं । ' गब्बर इज बॅक ' फिल्म में प्रशासन एवं राजनीति में व्याप्त विकृतियों को उघाडा गया हैं । भ्रष्टाचार यह समस्या संपूर्ण व्यवस्था को खोखला बना रही हैं । भ्रष्टाचार, लालफिताशाही आदि को अभिव्यक्त किया हैं 'जॉली एल.एल.बी.' फिल्म पुलिस प्रशासन एवं न्यायपालिका क्षेत्र में व्याप्त लुट–खसोट, षडयंत्र एवं दबावतंत्र को उघाडती हैं । गवाह को किसप्रकार तोडा–मरोडा और खरिदा जाता है । जान बुझकर निर्णय प्रकिया में देरी की जाती हैं इन सभी वास्तविकता को उघाडा गया हैं । सत्ता, कुर्सी एवं संपत्ती के दुरुपयोग को अभिव्यक्त किया हैं । ओह.माय. गॉड एवं पी. के. जैसी फिल्में धर्म, प्रथा, परंपरा एवं मान्यताओं के नामपर अवाम को किसप्रकार डर के सहारे लुटा जाता हैं इस वासतविकता को उघाडा हैं। धार्मिक क्षेत्र में व्याप्त पाखंड, धोखा–धडी, कर्मकांड, अंधविश्वास को स्वार्थी धर्म से बचने का संदेश दिया गया हैं ।

'लज्जा ' फिल्म में स्त्री वेदना, पीडा एवं घुटन की अभिव्यक्ति हुई हैं । औरत को केवल मशीनमात्र समझा जाता हैं । पति, समाज, परिवार एवं व्यवस्था अपने अनुरूप स्त्री का उपयोग एवं उपभोग करती हैं । स्त्री अस्तित्व को परिवार और वारिसतक सिमित रखा जाता हैं । स्त्री का अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता । यॅहा तक की विवाहपश्चात स्त्री के मॉता–पिता भी अपने ही लडकी को अन्याय, आत्याचार एवं शोषन के चकव्युह से बाहर निकलने के लिए सहायक नहिं होते । ' वैदहि' नामक पात्र के व्दारा भारतीय समाज में स्त्रींयों की दशा, दुर्दशा एवं प्रताडना को अभिव्यक्त किया गया हैं । झुठी–प्रतिष्ठा के नामपर निम्न–जाति के लडके को बली चढाया जाता हैं । रसुखदार परिवार के लडकी से प्रेम करने का परिनाम लडके कें संपूर्ण परिवार को भुगतना पडता हैं । इस फिल्म में पाश्चात संस्कृति के प्रभाव से उपजी उपभोगवादी मानसिकता को उघाडा गया है । महानगरों विवाहबाह्य संबधो को

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

वैध समझा जाता हैं । दुसरे विवाहित स्त्री, एवं पुरूषों के साथ मौज–नरती, शरावपान, पार्टि, शारिरिक संवध आदि को स्वीकार करने की घृणित प्रवृती को फिल्म में उघाडा गया हैं । फिल्म की नाईका वैदही को केवल परिवार को वारिस देनेवाली मशीन मात्र समझा जाता हैं । स्त्रीयों के भावनाओं के साथ – पुरुष किस प्रकार खिलवाड करता हैं उसे अपने इशारों पर नाचने के लिए मजबूर करता हैं इस वास्तविकता कों भी फिल्म में उघाडा हैं । स्त्री–भृण हत्या, और परिवार को वारिस के नामपर, जन्मलेनी वाली लडकी को दुध में डुबोकर मारे जानेवाली कृप्रथा का चित्रण अंतत्य मार्मिक बन पडता हैं । रसुखदार, जमींदार, पुँजीपती स्त्री का उपभोग भी करते हैं और शोषण भी । निम्नजाति का लडका उच्च जाति के लडकी से प्रेम करता हैं जिसकारण गॉव का जमिदार निम्नजाति के लडके की मॉ का बलात्कार कर उसको जिंदा जला देता हैं । प्रथा, परंपराके नामपर समाज की पशुता, क्रुरता एवं हिंसकवृत्ती को अभिव्यक्त किया गया हैं । देहेजप्रथा के नामपर लडकी और उनके परिवार के होनेवाले शोषण को अभिव्यक्त किया हैं । प्रथा, परंपरा, सभ्यता एवं प्रतिष्ठा के नामपर लडकी के माता–पिता को दहेज देने को मजबुर होना पडता हैं । माता – पिता अपना पेट कॉटकर अपनीसारी इच्छाओं को दबा कर दहेज की तैयारी लडकी के जन्म से ही करते हैं । उन्हें लडकेवालों के सामने नतमस्तक होकर रहना पडता हैं । इतना हि नहीं अपने लडकी के दहेज के लिए वेश्याव्यवसाय को मजबूर होती मॉ का चित्रण भी इस फिल्म में दहेज की भयावहता को दर्शाता हैं । दहेज का विरोध कर स्त्री मुक्ति का स्वर भी उजागर किया गया हैं । सड़ी–गली प्रथाओं के विरोध में आवाज बुलंद करती नाईका समाज के लिए एक आशा की किरण हैं ।

'जानकी' पात्र के व्दारा लडकी के मजबुरी का फायदा उठाकर उसका किस प्रकार शोषन किया जाता हैं उसे उघाडा हैं। जानकी को वासनांध लालसा का शिकार बनाया जात हैं इस वास्तविकता को अभिव्यक्त किया हैं । कुवॉरी माता की समस्या को भी चित्रित किया हैं । विवाह का झॉसा देकर एवं लडकी को प्रेमजाल में फॉसकर गर्भवती बनाया जात हैं और लडकी को दर–दर की ठोकरे खाने कों मजबूर कर दिया जाता हैं ।अपनी वासना को पूरा करने के लिए लोंगो के परिवार को तोंडनेवाली मानसिकता को भी उघाडा हैं । अपने पैरो पर खडेहोने वाले स्त्री को बच्चलन, चरित्रहिन एवं वैश्यातक कॅहा जाता हैं । 'लज्जा' फिल्म नारी शोषण, त्रासदी, पीड़ा अन्याय एवं अत्याचार की करुण गाथा हैं । चरित्र, स्वाभिमान एवं मान–सन्मान को कुचलनेवाली पुरुषी अहंकार की गाथा है लज्जा । प्रेम , स्नेह, बलिदान, त्याग, समर्पन विश्वास के बदले स्त्री जीवन में पीड़ा एवं त्रासदी आई हैं । अनादिकाल से चल रहीं स्त्री – शोषन की श्रृंखला लज्जा हैं । उमराव जान, अभिमान, दामिनी, बेंडिट क्वीन, जुवैदा, गजगामिनी, अस्तित्व, चॉदनीबार, चमेली, ब्लॅक, बॅडबाजा बारात, लिपिस्टिक अंडर माय बुर्क, टू–स्टेटस, आदि अनेकों फिल्मों में स्त्री पीडा को पर्दे पर उतारा गया हैं । दुसरी ओर नारी मुक्ति, नारी अस्मिता और नारी स्वतंत्रता को भी वाणी प्रदान कि गई हैं । समाज, पुरुष, और व्यवस्था की जजीरों को तोडती नारी फिल्म का विषय बनी हैं ।

मधुर भांडारकर कृत ' पेज –थ्री'एवं ट्राफिक सिग्नल फिल्म में पाश्चात उपभोग वादि संस्कृति के प्रभाव स उपजी मानसिकता एवं समस्या को उघाडा गया हैं । बाजारीकरण एवं पाश्चात संस्कृति के कारण रहन–सहन, खान–पान, मुल्य, मानसिकता, एवं विचार विक्षिप्त हो गए हैं । अर्थ, सत्ता, संपत्ती, भौतिक सुखसाधन एवं कामवासना को प्रधानता दि जा रहीं हैं । मानवता, संवेदनशीलता एवं समपर्ण को बोझ एवं बेतूका समझा जा रहा हैं

ADAT VYAPAR ... SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE, DEGLOOR Dist.Nanded

' पेज –थ्री' फिल्म के माध्यम से स्त्री–शोषन, एवं वासनातृप्ती के विकृत एवं विक्षिप्त रुपों को उघाडा हैं । चाईल्ड सेक्स, समलैंगिकता, विवाहबाह्य संबंध को फिल्म में चित्रित किया हैं । महानगरीय जीवन की उपभोगवादी वासनांध एवं विकृत मानसिकता को उघाडा हैं । फिल्म जगत, व्यवसाय जगत, सामाजिक सेवा क्षेत्र, विज्ञापन, आदि क्षेत्र में व्याप्त विसंगती, विकृती एवं विडंबनाओं को भी उघाडा गया हैं । अमीर परिवारों में व्याप्त कुंठा, अविश्वास, अजनबीपण, वासनांध विकृती, एवं धोखा धडी को भी फिल्म में अभिव्यक्त किया हैं । दिल तो अभी बच्चा हैं, वीरे द वेडिंग, लव आजकल, हाफ गर्लफेंड, दोस्ताना, मर्डर, जिस्म, आदि फिल्मों में महानगरीय समस्या एवं पाश्चात संस्कृति का प्रभाव दृष्टिगोचर होता हैं । आंधी, राजनीति, सरकार, बॉम्बे, आरक्षण, नायक, कारपोरेट, अपहरण, काला जैसी अनेकों फिल्मों मे राजनीतिक षडयंत्र, पाखंड, लुटखसोट, दबावतंत्र, सत्ता का दुरुपयोग आदि को अभिव्यक्त किया गया हैं । नेता अपने स्वार्थ के लिए जनता का शोषन करती हैं । औरतों को साथ किस प्रकार खिलवाड करती हैं । सत्ता पाने के लिए धर्म, जाति, संप्रदाय एवं गुंडों का सहारा लेती है । इन सभी वास्तविकता को हिन्दी फिल्मों में उघाडा गया हैं । राजनीतिक षडयंत्र, राजनीतिक उठा–पटक, राजनीतिक घटनायें, राजनीतिक घोटाले, भ्रष्टाचार आदि सभी को फिल्में बखुभी दिखाती हैं । आतंकवाद, धर्मांधता, सांप्रदायिकता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर' फिजा', ' मिशन–कश्मीर', ' द हिरो', ' कमांडो', ' कसम हिन्दुस्थान की', ' माँ तुझे सलाम' आदि अनेंको फिल्मों बनी हैं । मद्रास कॅफे, टॅंगो चार्ली जैसी फिल्में नकलवाद, माओवाद एवं उग्रवाद की समस्या को उघाडती हैं ।

समाज और हिन्दी फिल्मों का गहरा संबध रहा हैं । हिन्दी फिल्मों ने बदलते सामाजिक परिवेश के साथ अपने तेवर भी बदले हैं । समाज का सर्वांगीन चित्रण, समाज में घटित विविध महत्वपुर्ण घटनाएँ। समाज में व्याप्त विविध समस्यावों, विकृतियों, विडंबनाओ, एवं विषमताओं को फिल्मों में अभिव्यक्त किया गया हैं । सामाजिक समस्या को उदघाटित कर समाज का संचलन एवं नवनिर्माण का प्रयास किया गया । मानव सोच को सकारात्मक रुप में परिवर्तीत करने का प्रयास किया गया । भारतीय आर्दश, मुल्यों एवं मान्यताओं की स्थापना फिल्मों के माध्यमसे की गई । स्त्री, दलीत, आदिवासी एवं किसान वर्ग की वास्तविकता को उघाडकर मानवतावाद की स्थापना का सफल प्रयास किया गया । राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रएकात्मता, राष्ट्रस्वाभिमान, सांप्रदाईक सोहार्द, मानवकल्याण, वर्गसमानता, एवं स्त्री स्वालंबन को साधने का सफल प्रयास एवं वास्तविक अभिव्यक्ति हिन्दी फिल्मों में दृष्टिगोचर होती हैं । हिन्दी फिल्मों में समाज की वास्तविक अभिव्यक्ति हुई हैं ।

Dist.Nanded

'थ्री पेज –थ्री' फिल्म के माध्यम से स्त्री–शोषन, एवं वासनातृप्ती के विकृत एवं विक्षिप्त रुपों को उघाडा हैं । चाईल्ड सेक्स, समलैंगिकता, विवाहबाह्य संबंध को फिल्म में चित्रित किया हैं । महानगरीय जीवन की उपभोगवादी वासनांध एवं विकृत मानसिकता को उघाडा हैं । फिल्म जगत, व्यवसाय जगत, सामाजिक सेवा क्षेत्र, विज्ञापन, आदि क्षेत्र में व्याप्त विसंगती, विकृती एवं विडंबनाओं को भी उघाडा गया हैं । अमीर परिवारों में व्याप्त कुंठा, अविश्वास, अजनबीपण, वासनांध विकृती, एवं धोखा धडी को भी फिल्म में अभिव्यक्त किया हैं । दिल तो अभी बच्चा हैं, वीरे द वेडिंग, लव आजकल, हाफ गर्लफ्रेंड, दोस्ताना, मर्डर, जिस्म, आदि फिल्मों में महानगरीय समस्या एवं पाश्चात संस्कृति का प्रभाव दृष्टिगोचर होता हैं । आंधी, राजनीति, सरकार, बॉम्बे, आरक्षण, नायक, कारपोरेट, अपहरण, काला जैसी अनेकों फिल्मों मे राजनीतिक षडयंत्र, पाखंड, लुटखसोट, दबावतंत्र, सत्ता का दुरुपयोग आदि को अभिव्यक्त किया गया हैं । नेता अपने स्वार्थ के लिए जनता का शोषन करती हैं । औरतों को साथ किस प्रकार खिलवाड करती हैं । सत्ता पाने के लिए धर्म, जाति, संप्रदाय एवं गुंडों का सहारा लेती है । इन सभी वास्तविकता को हिन्दी फिल्मों में उघाडा गया हैं । राजनीतिक षडयंत्र, राजनीतिक उठा–पटक, राजनीतिक घटनायें, राजनीतिक घोटाले, भ्रष्टाचार आदि सभी को फिल्में बखुभी दिखाती हैं । आतंकवाद, धर्मांधता, सांप्रदायिकता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर' फिजा', ' मिशन–कश्मीर', ' द हिरो', ' कमांडो', ' कसम हिन्दुस्थान की', ' मॉ तुझे सलाम' आदि अनेंको फिल्मों बनी हैं । मद्रास कॅफे, टॅगो चार्ली जैसी फिल्में नकलवाद, माओवाद एवं उग्रवाद की समस्या को उघाडती हैं ।

समाज और हिन्दी फिल्मों का गहरा संबध रहा हैं । हिन्दी फिल्मों ने बदलते सामाजिक परिवेश के साथ अपने तेवर भी बदले हैं । समाज का सर्वांगीन चित्रण, समाज में घटित विविध महत्वपुर्ण घटनाएँ। समाज में व्याप्त विविध समस्यावों, विकृतियों, विडंबनाओ, एवं विषमताओं को फिल्मों में अभिव्यक्त किया गया हैं । सामाजिक समस्या को उदघाटित कर समाज का संचलन एवं नवनिर्माण का प्रयास किया गया । मानव सोच को सकारात्मक रुप में परिवर्तीत करने का प्रयास किया गया । भारतीय आर्दश, मुल्यों एवं मान्यताओं की स्थापना फिल्मों के माध्यमसे की गई । स्त्री, दलीत, आदिवासी एवं किसान वर्ग की वास्तविकता को उघाडकर मानवतावाद की स्थापना का सफल प्रयास किया गया । राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रएकात्मता, राष्ट्रस्वाभिमान, सांप्रदाईक सोहार्द, मानवकल्याण, वर्गसमानता, एवं स्त्री स्वालंबन को साधने का सफल प्रयास एवं वास्तविक अभिव्यक्ति हिन्दी फिल्मों में दृष्टिगोचर होती हैं । हिन्दी फिल्मों में समाज की वास्तविक अभिव्यक्ति हुई हैं ।

–

Screenshot_20190330-202043_Chrome.jpg

e Contact Us Hindi

VoLTE 4G 39% 8:20 pm

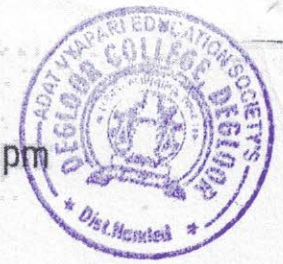

ADAT VYAPARI EDUCATION SOCIETY'S DEGLOOR COLLEGE DEGLOOR * Dist.Nanded *

UGC Approved List of Journals

ched for **AJANTA**

urnals : 1

Show 25 ▾ entrie

Search:

Sl.No.	Journal No	Title	Publisher
1	40776	Ajanta	AJANTA PRAKASHAN,AURANGABAD

Showing 1 to 1 of 1 entries

Previous 1 Next

icials

Dr. Anil Chidrawar
I/C Principal
A.V. Education Society's
Degloor College, Degloor Dist.Nanded